Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

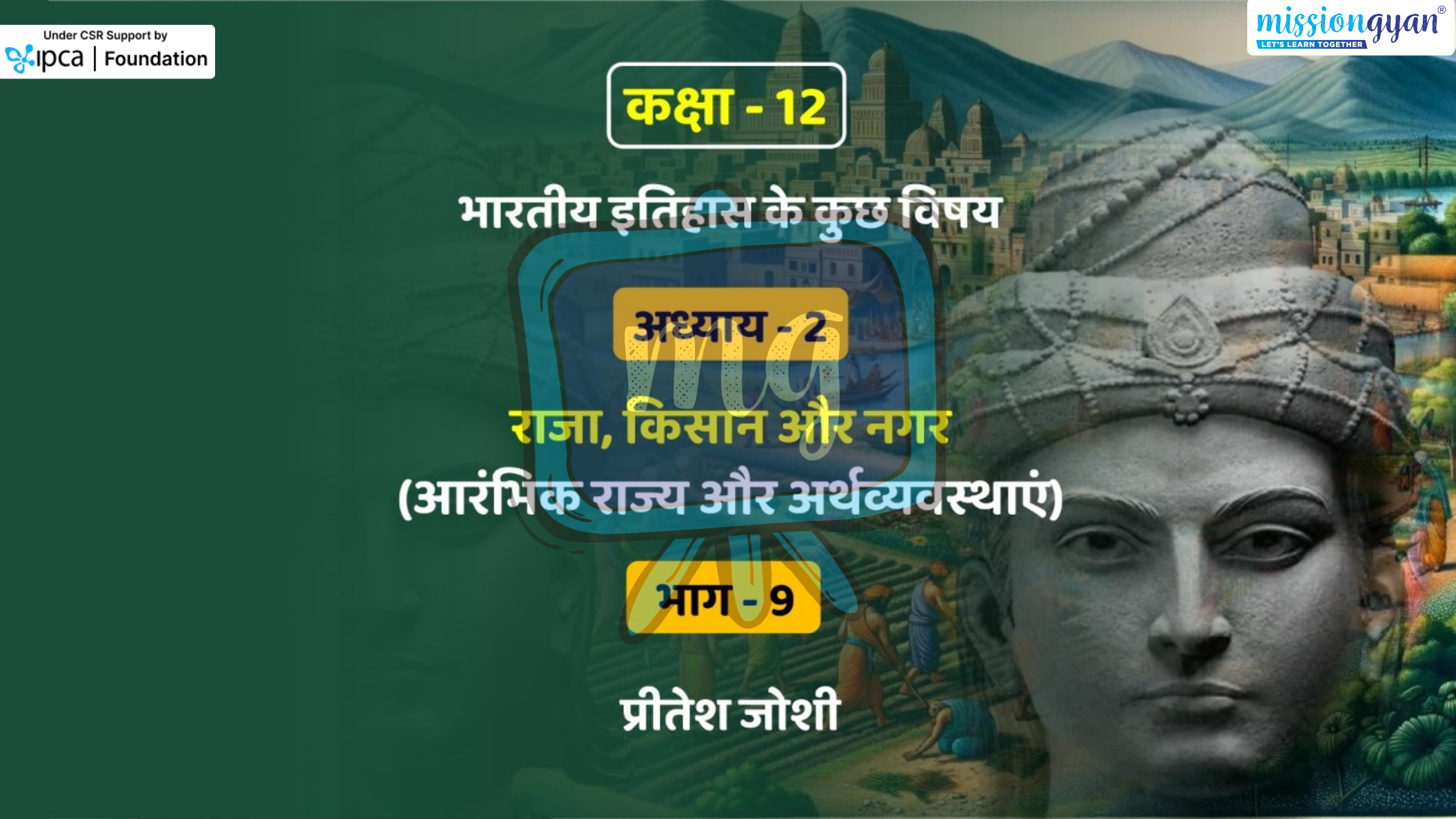

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 2

राजा, किसान और नगर

(आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएं)

भाग - 9

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

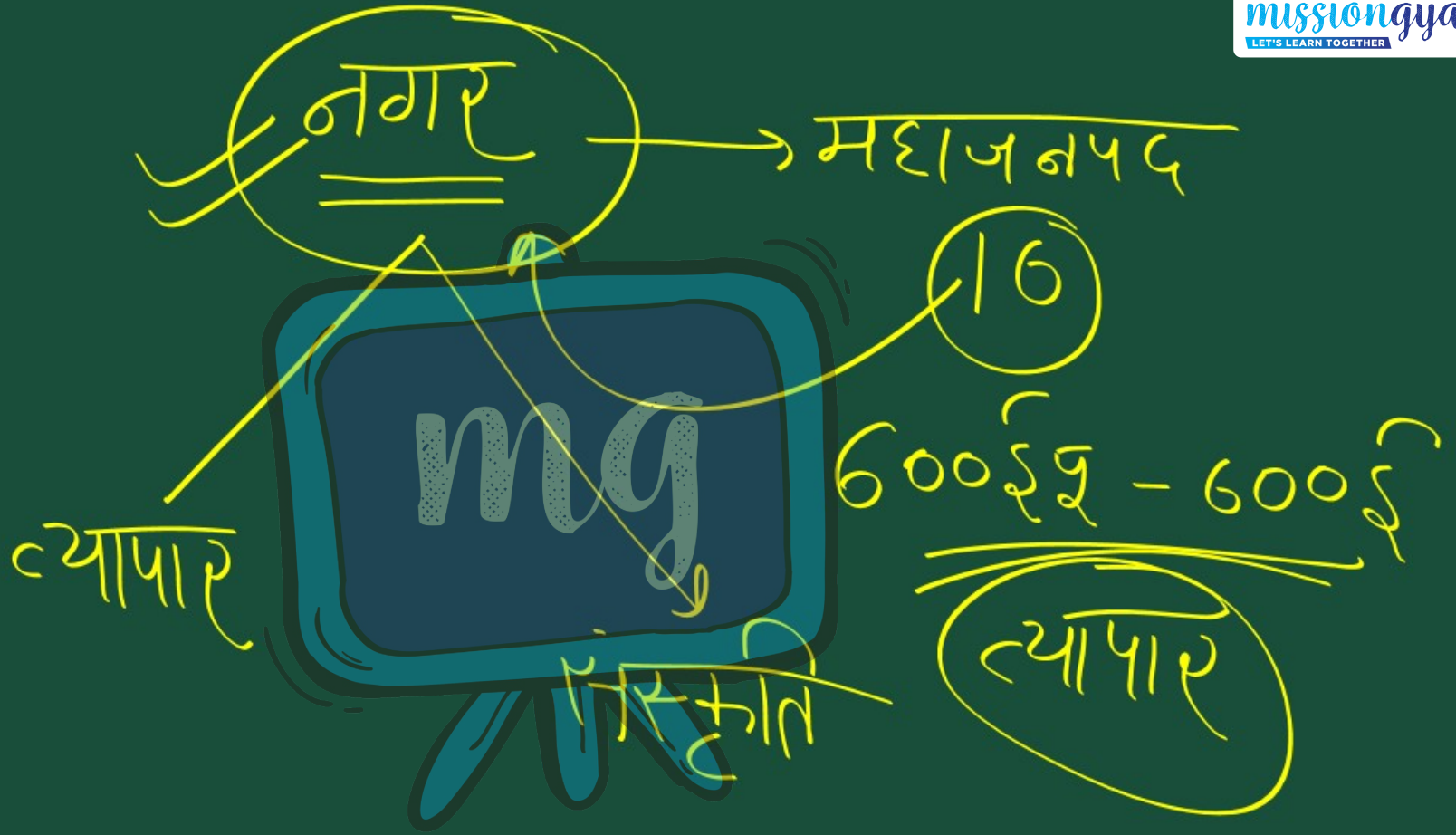

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



उपमहाद्वीप और उसके बाहर का व्यापार :–

- छठी शताब्दी ई.पू. से ही उपमहाद्वीप में नदी मार्गों और भूमार्गों का जाल बिछ गया था और कई दिशाओं में फैल गया था।
- मध्य एशिया और उससे भी आगे तक भू–मार्ग थे।
- समुद्रतट पर बने कई बंदरगाहों से जलमार्ग मुख्य रूप से 2 बन गये थे –

1. अरब सागर से होते हुए, उत्तरी अफ्रीका, पश्चिम एशिया तक फैल गया।
2. बंगाल की खाड़ी से यह मार्ग चीन और दक्षिणपूर्व एशिया तक फैल गया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

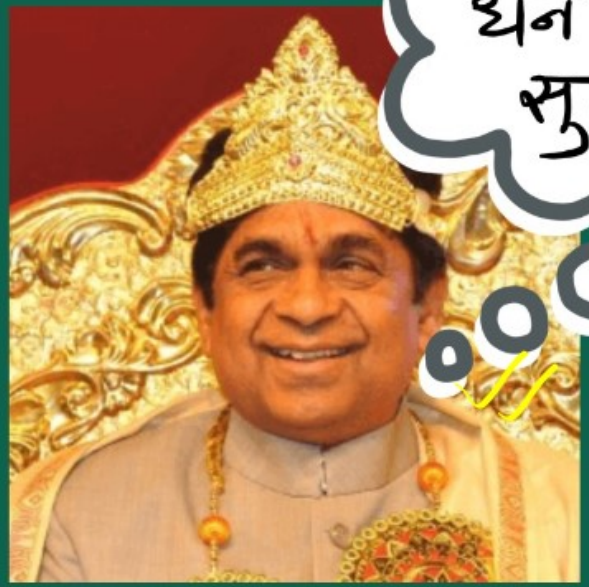

व्यापारिक

- शासकों ने प्रायः इन मार्गों पर नियंत्रण करने की कोशिश की और संभवतः वे इन मार्गों पर व्यापारियों की सुरक्षा के बदले उनसे धन लेते थे।
- इन मार्गों पर चलने वाले व्यापारियों में पैदल फेरी लगाने वाले व्यापारी तथा बैलगाड़ी और घोड़े-खच्चरों जैसे जानवरों के दल के साथ चलने वाले व्यापारी होते थे।
- समुद्री मार्ग से भी लोग यात्रा करते थे जो खतरनाक तो थी, लेकिन बहुत लाभदायक भी होती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

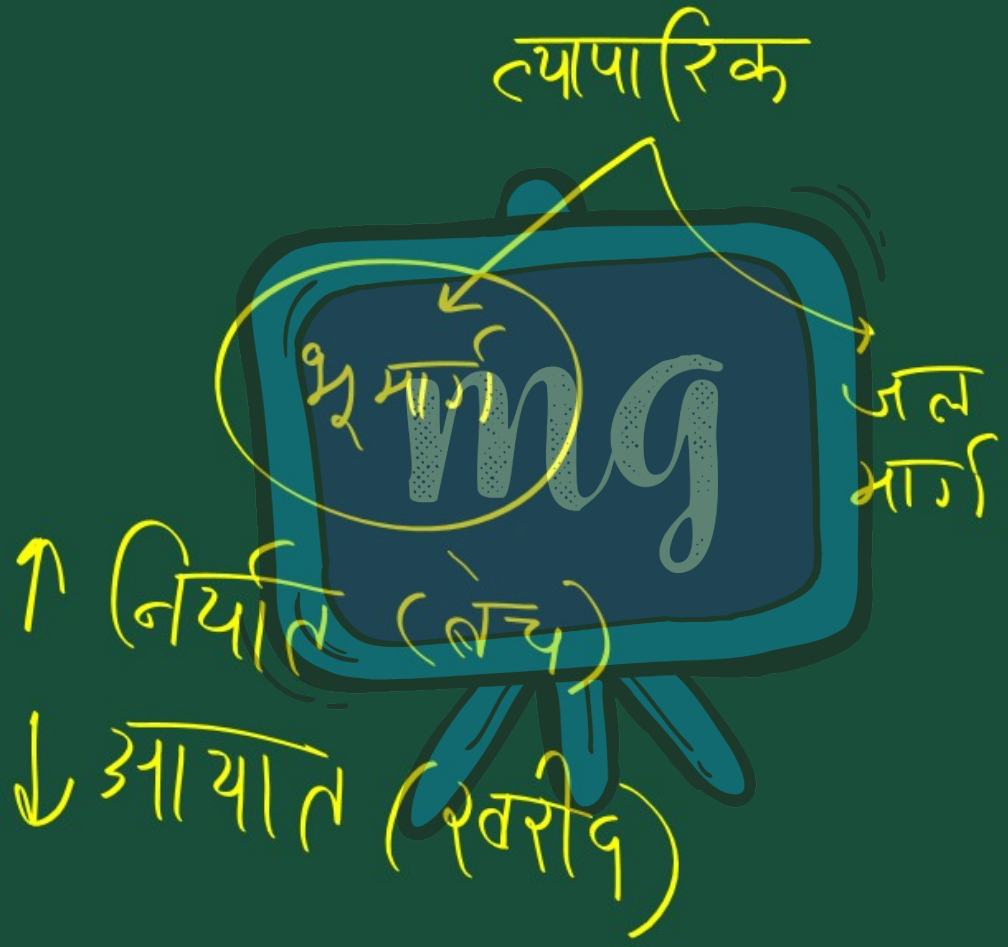

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER





मसाले लाओ!

- तमिल भाषा में मसत्थुवन और प्राकृत में सत्थवाह और सेट्ठी के नाम से प्रसिद्ध सफल व्यापारी बड़े धनी हो जाते थे।
- नमक, अनाज, कपड़ा, धातु और उससे निर्मित उत्पाद, पत्थर, लकड़ी, जड़ी–बूटी जैसे अनेक प्रकार के सामान एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाए जाते थे।
- रोमन साम्राज्य में काली मिर्च, जैसे मसालों तथा कपड़ों व जड़ी–बूटियों की भारी माँग थी।
- इन सभी वस्तुओं को अरब सागर के रास्ते भूमध्य क्षेत्र तक पहुँचाया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

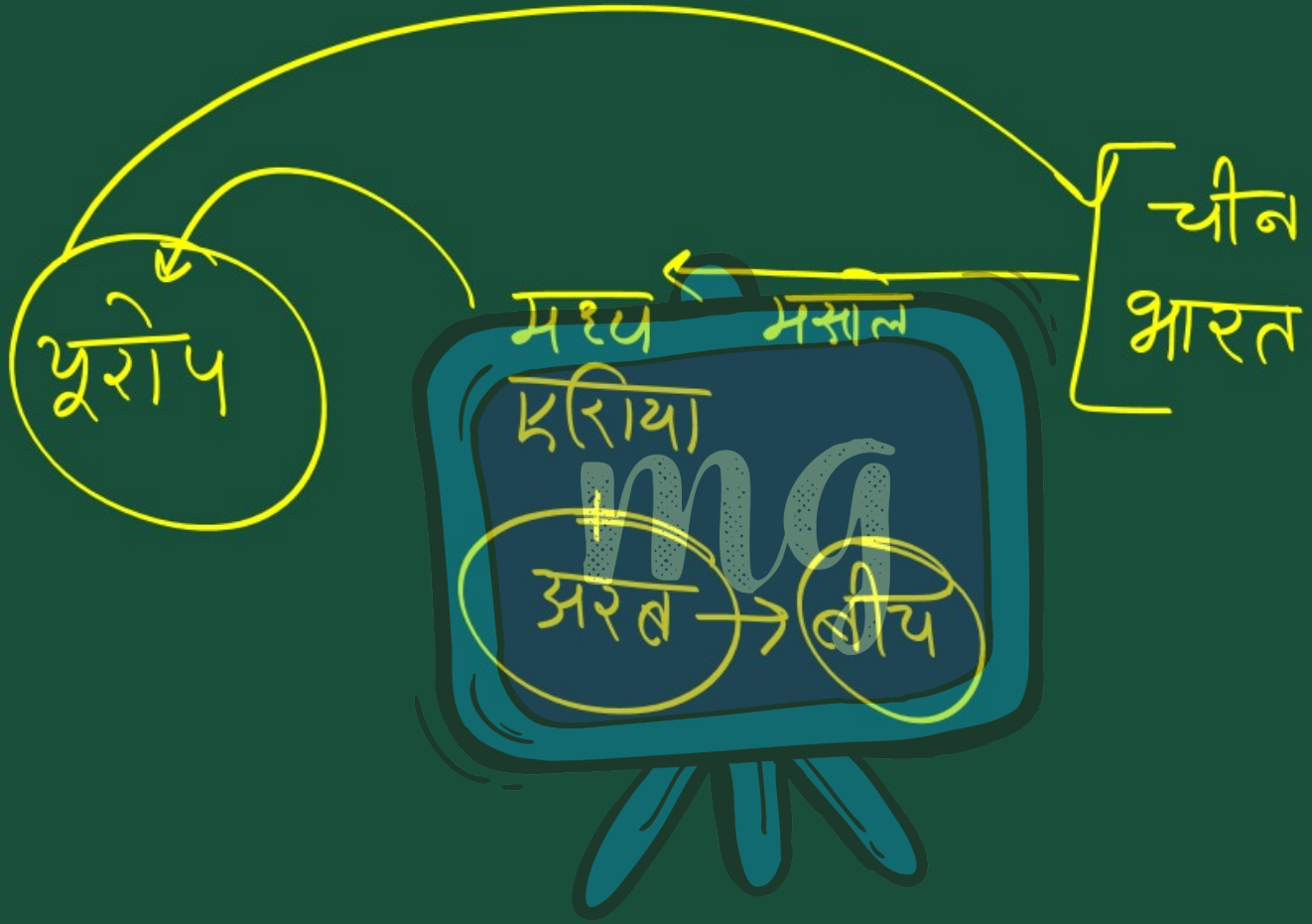

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्राचीन

मालाबार तट (आधुनिक क

यह एक यूनानी समुद्र यात्री द्वारा रचित पेरिप्लस ऑफ एरीथ्रियन सी का एक अंश (लगभग प्रथम शताब्दी ई.) है।

भारी मात्रा में काली मिर्च और दाल चीनी खरीदने के लिए बाज़ार वाले नगरों में वे (विदेशी व्यापारी) जहाज भेजते हैं। एक तो यहाँ भारी मात्रा में सिक्कों, पुखराज, सुरमा, मूँगे, कच्चे शीशे, ताँबे, टिन और सीसे का आयात किया जाता है... इन बाजारों के आसपास, भारी मात्रा में उत्पन्न काली मिर्च का निर्यात किया जाता है... इसके अलावा, उच्च कोटि के मोतियों, हाथी दाँत, रेशमी वस्त्र विभिन्न प्रकार के पारदर्शी पत्थरों, हीरों और काले नग और कछुए की खोपड़ी का भारी मात्रा में आयात होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

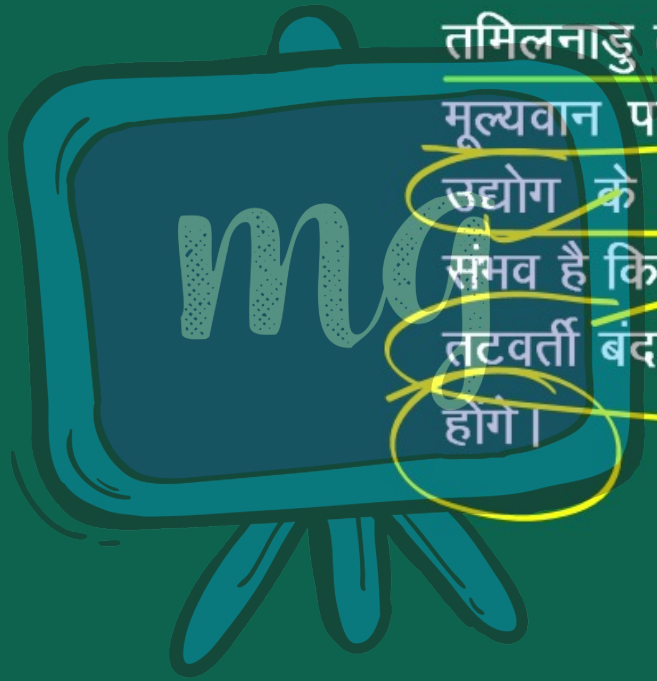

तमिलनाडु के कोडुमनाल में बहुमूल्य और कम मूल्यवान पत्थरों से बनाए जाने वाले मूँगों के उद्योग के पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं। यह संभव है कि पेरिप्लस में वर्णित पत्थरों को इन्हीं तटवर्ती बंदरगाहरों तक स्थानीय व्यापारी लाए होंगे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. 600 ई॰ के भारत की व्यापारिक स्थिति का वर्णन करे?

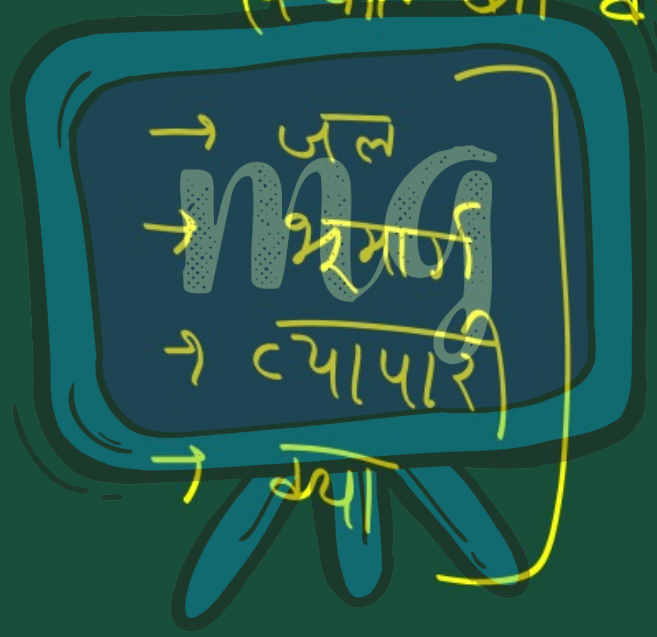

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मुद्रा

शासन

आहत → पंचमार्क सिक्के

सिक्के और राजा :–

व्यापार के लिए सिक्के के प्रचलन से विनिमय कुछ हद तक आसान हो गया था।

चाँदी और ताँबे के आहत सिक्के (छठी शताब्दी ई.पू.) सबसे पहले ढाले गए और प्रयोग में आए। पूरे उपमहाद्वीप में खुदाई के दौरान इस प्रकार के सिक्के मिले हैं।

आहत सिक्के – धातु के टुकड़े पर चिन्ह विशेष ठप्पा मारकर बनाये जाते थे। इन पर प्रतीकों को आहत किया जाता था।



आहत शब्द से ही स्पष्ट है कि इन सिक्कों पर

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मैं हूँ मुद्राशास्त्री



मुद्राशास्त्र विज्ञान

- मुद्राशास्त्रियों ने इनका और अन्य सिक्कों का अध्ययन करके उनके वाणिज्यिक प्रयोग के संभावित क्षेत्रों का पता लगाया है।
- मुद्राशास्त्र – इसमें सिक्कों का अध्ययन होता है। इसके साथ ही उन पर पाये जाने वाले चित्र, लिपि आदि तथा उनकी धातु का विश्लेषण और जिन संदर्भ में इन सिक्कों को पाया गया है। उनका अध्ययन भी इसमें आता है।
- आहत सिक्के पर बने प्रतीकों को उन विशेष मौर्य वंश जैसे राजवंशों के प्रतीकों से मिलाकर पहचान करने की कोशिश की गई तो पता चला कि इन सिक्कों को राजाओं ने जारी किया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

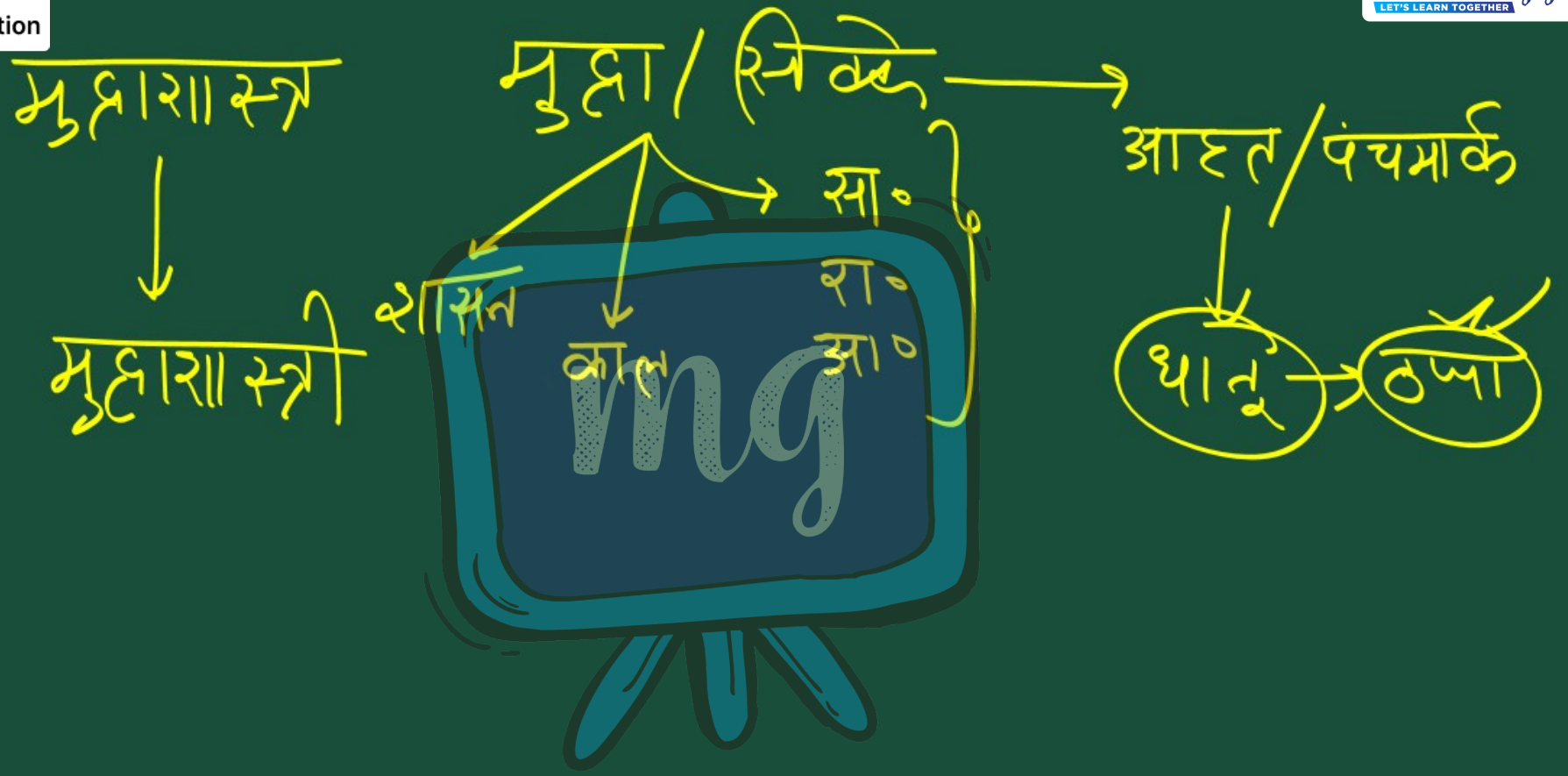

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

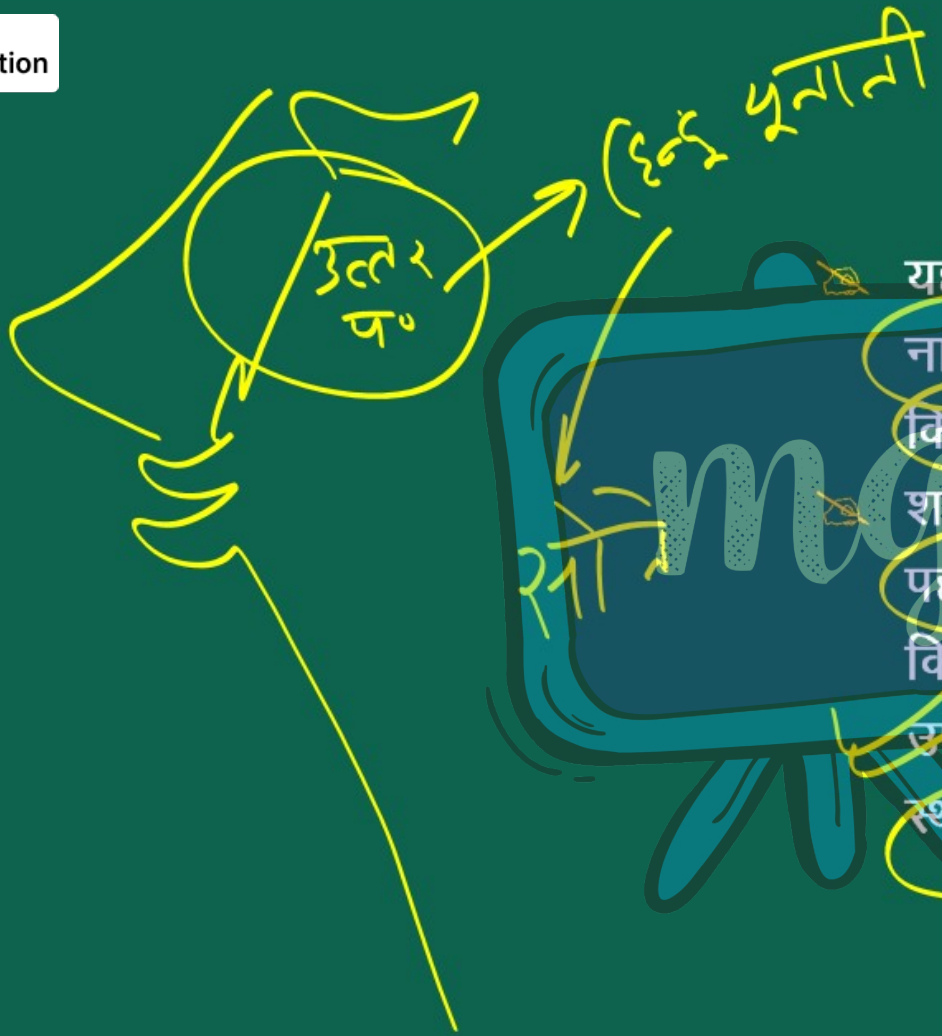

यह भी संभव है कि व्यापारियों, धनपतियों और नागरिकों ने इस प्रकार के कुछ सिक्के जारी किए हों।

शासकों की प्रतिमा और नाम के साथ सबसे पहले सिक्के हिंद–यूनानी शासकों ने जारी किए थे जिन्होंने द्वितीय शताब्दी ई.पू. में उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



सोने के सिक्के बड़े पैमाने पर प्रथम शताब्दी ई. में कुषाण राजाओं ने जारी किए थे। इनके आकार और वजन तत्कालीन रोमन सम्राटों तथा ईरान के पार्थियन शासकों द्वारा जारी सिक्कों के बिल्कुल समान थे। उत्तर और मध्य भारत के कई पुरास्थलों पर ऐसे सिक्के मिले हैं।

सोने के सिक्कों के व्यापक प्रयोग से संकेत मिलता है कि बहुमूल्य वस्तुओं और भारी मात्रा में वस्तुओं का विनिमय किया जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

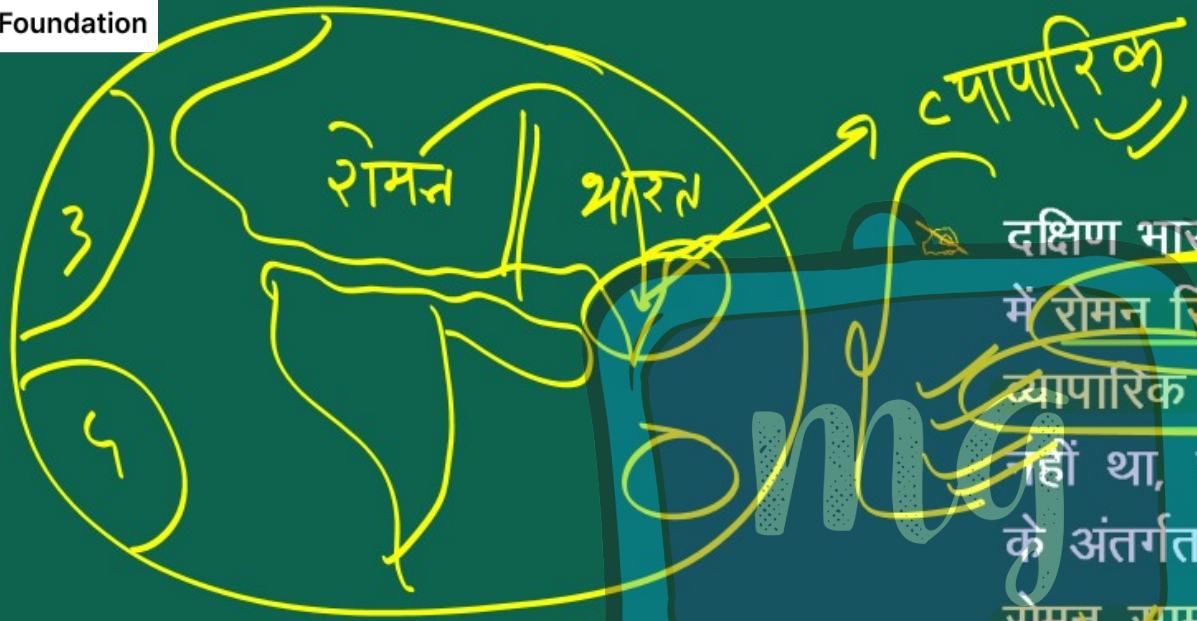

दक्षिण भारत के अनेक पुरास्थलों से बड़ी संख्या में रोमन सिक्के मिले हैं जिनसे यह स्पष्ट है कि व्यापारिक तंत्र राजनीतिक सीमाओं से बँधा नहीं था, क्योंकि दक्षिण भारत रोमन साम्राज्य के अंतर्गत न होते हुए भी व्यापारिक दृष्टि से रोमन साम्राज्य से संबंधित था।



पंजाब और हरियाणा जैसे क्षेत्रों के यौधेय कबायली गणराज्यों (प्रथम शताब्दी ई.) ने सिक्के जारी किए थे। पुराविदों को इन शासकों द्वारा जारी ताँबे के सिक्के हजारों की संख्या में मिले हैं जो यौधेयों की व्यापार में रुचि और सहभागिता परिलक्षित होती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सोने के भव्य सिक्कों में से कुछ गुप्त शासकों ने जारी किए। इनके आरंभिक सिक्कों में प्रयुक्त सोना अति उत्तम था। इन सिक्कों के माध्यम से दूर देशों से व्यापार–विनिमय करने में आसानी होती थी जिससे शासकों को भी लाभ होता था।



एक गुप्त सिक्का

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

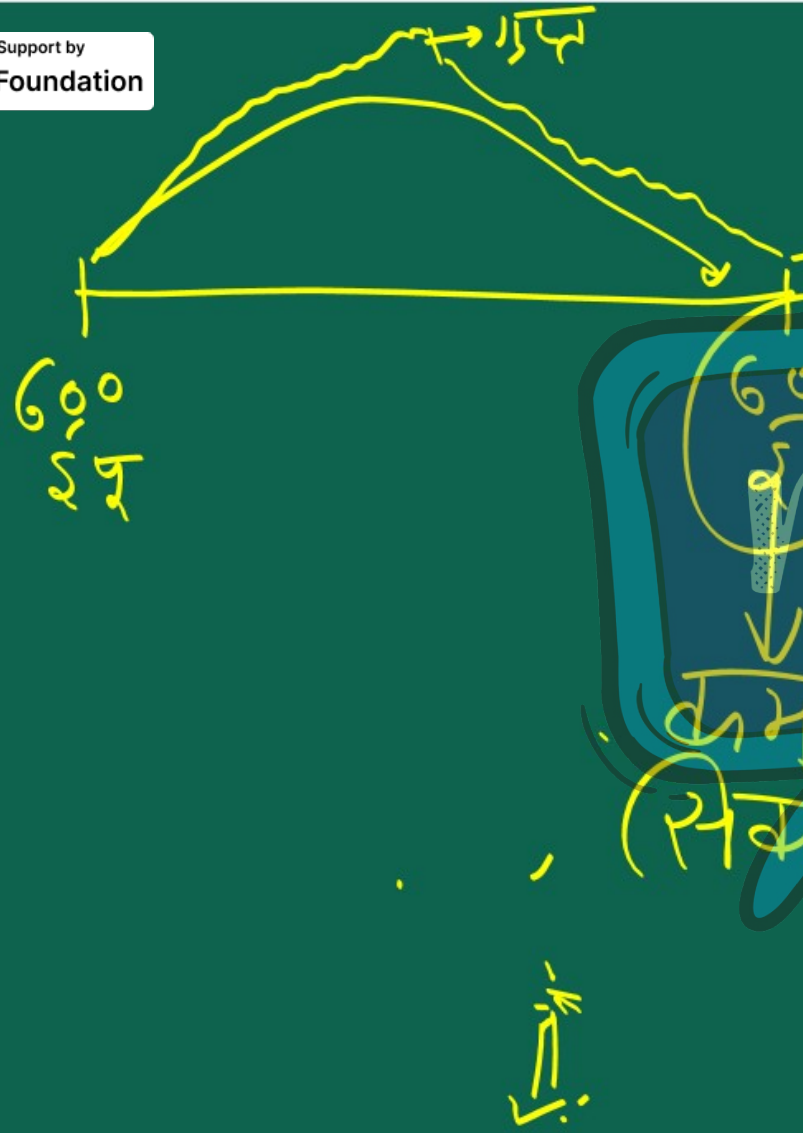

छठी शताब्दी ई. से सोने के सिक्के मिलने कम हो गए। संभवतः उस काल में कुछ आर्थिक संकट पैदा हो गया हो।

कुछ का मानना है कि रोमन साम्राज्य के पतन के बाद दूरवर्ती व्यापार में कमी आई जिससे उन राज्यों, समुदायों और क्षेत्रों की संपन्नता पर असर पड़ा जिन्हें दूरवर्ती व्यापार से लाभ मिलता था।

अन्य का कहना है, कि नगरों के साथ–साथ व्यापार के नवीन तंत्रों का उदय होने लगा था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



इसके बाद भी अभिलेखों और ग्रंथों में सिक्के का उल्लेख होना दर्शाता है कि सिक्के मिलने कम इसलिए हो गये है कि वो प्रचलन में तो थे परन्तु उनका किसी ने संग्रह करके नहीं रखा था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

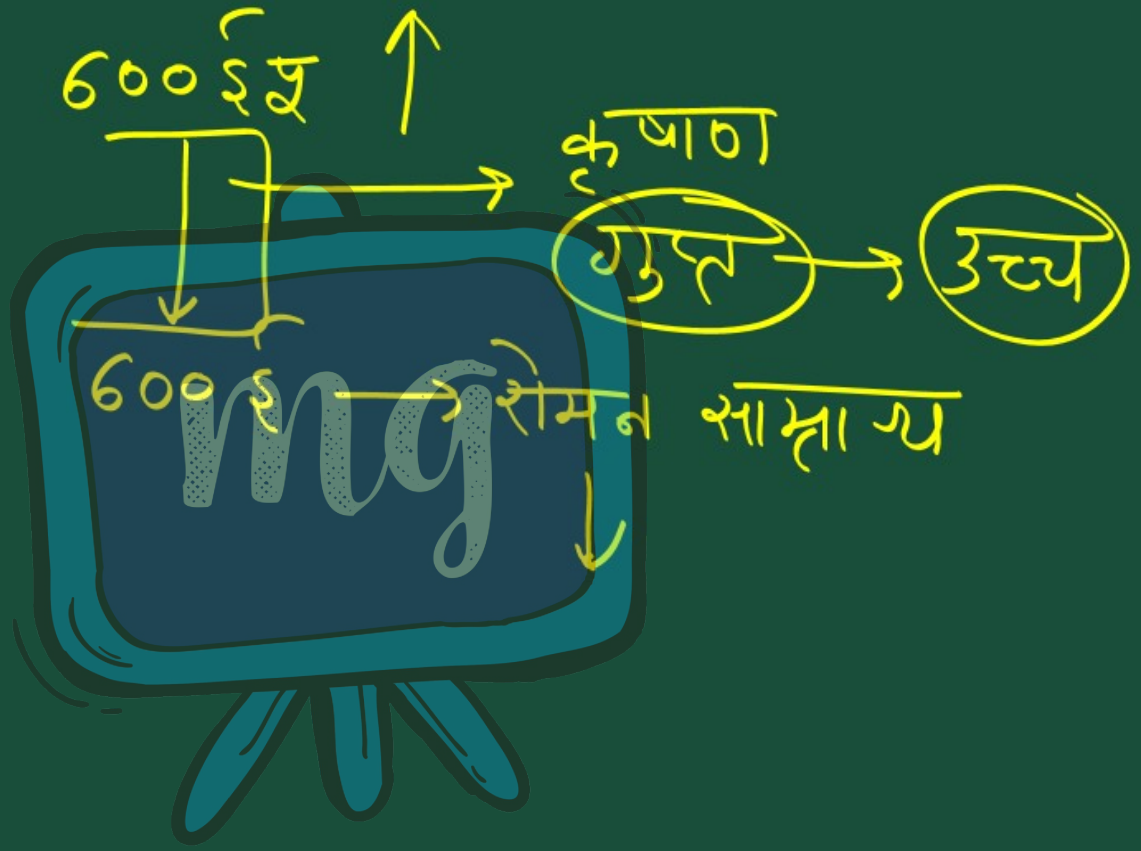

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मुद्राशास्त्र क्या होता है?

Q. आहत सिक्के ?

Q. 600 ई तक सिक्को का वैज्ञानिक कितना पुराना प्रयत्न कम क्यो हुआ



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

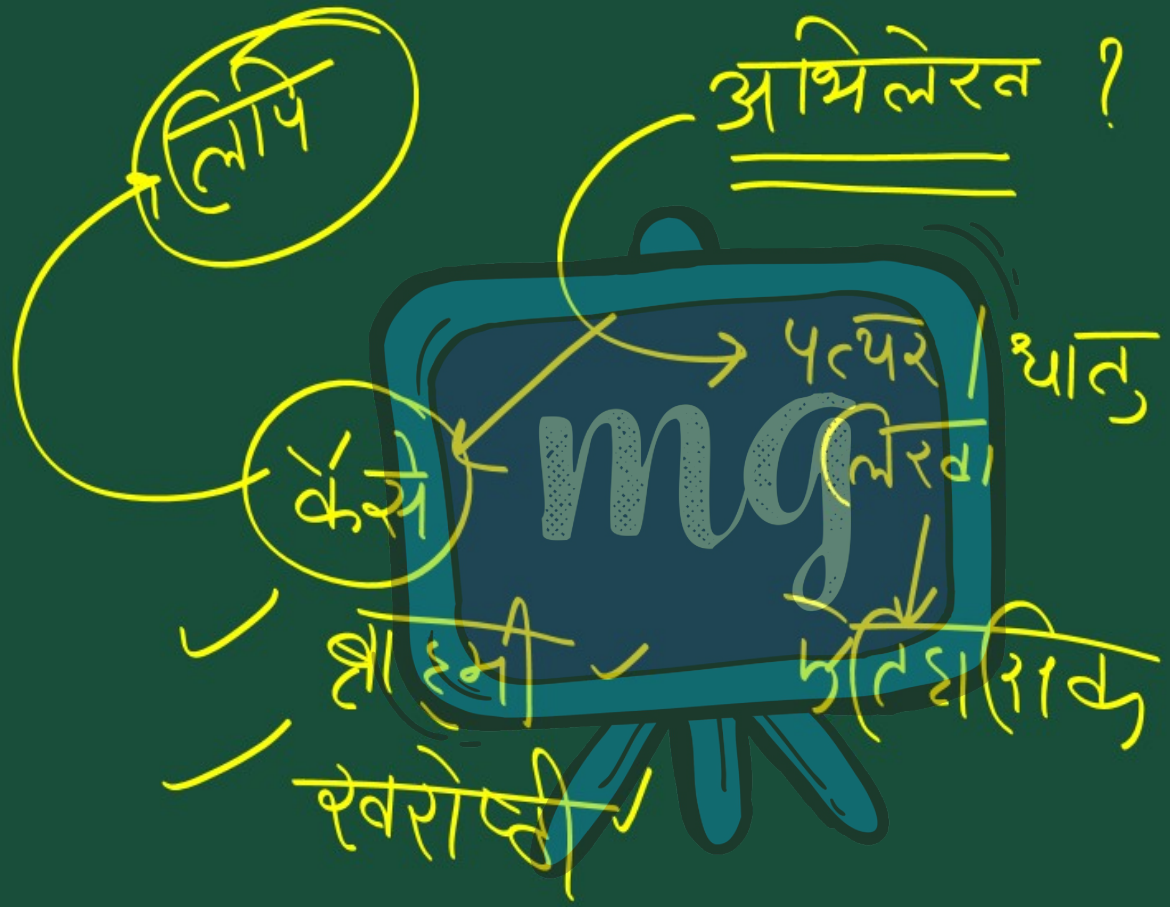

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पढ़ा ?

अक्षर

